

EVENT REPORT

NORTH EASTERN COUNCIL ORGANIZES REGIONAL WEBINAR ON 11TH AYURVEDA DAY 2026

(<https://necouncil.gov.in/publication/press-releases>)

Shillong, September 23, 2026: The North Eastern Council (NEC) organized a Regional Webinar at the NEC Conference Hall, Shillong, on the occasion of the **11th Ayurveda Day - 2026**, under the theme “**Ayurveda for a Healthier Tomorrow.**” The webinar focused on “**Preserving the Health Heritage of the North-Eastern Region - Local Health Traditions, Folk Practices and the Path to Systematic Documentation.**”

The session was addressed by **Prof. (Dr.) Rama Kanta Sharma**, Former Principal, Government Ayurvedic College & Hospital, Guwahati and IA Ayurvedic Medical College, affiliated with USTM, Meghalaya.

The webinar highlighted the rich and diverse traditional health knowledge of the eight North-Eastern States, including **local healing practices, medicinal plants, indigenous knowledge and community-based traditions**. It emphasized that much of this knowledge continues to be preserved and transmitted orally within communities.

The session also drew attention to the challenges of preserving traditional knowledge, particularly due to ageing knowledge holders, changing lifestyles, migration and limited written documentation. The existing mechanisms of the **Ministry of AYUSH and CCRAS** for documentation, screening, research and validation of traditional health practices were also discussed.

The webinar identified areas such as **medicinal plants, local healing practices, maternal and traditional care, ethno-dietary practices, bone-setting and community wellness practices** as potential domains for systematic documentation. It stressed that documentation should be followed by scientific screening, research and validation before any claims of efficacy are

established.

\\



A regional approach involving **communities, State AYUSH Departments, NEC/NERCEN, CCRAS/AYUSH research institutions, universities and researchers** was proposed to strengthen knowledge mapping and reduce fragmentation across the region. The guiding principle highlighted during the session was **“Think Regionally. Document Locally. Validate Scientifically.”**



The webinar concluded by emphasizing the need to **preserve, document, protect and understand** the traditional health knowledge of the North-Eastern

Region and work towards developing a living regional knowledge base, with communities and knowledge holders remaining central to the process.



कार्यक्रम रिपोर्ट

“11वें आयुर्वेद दिवस – 2026 का आयोजन”

“पूर्वोत्तर क्षेत्र की स्वास्थ्य विरासत का संरक्षण” विषय पर क्षेत्रीय वेबिनार

- **कार्यक्रम का नाम:** 11वाँ आयुर्वेद दिवस – 2026
- **दिनांक:** 23 सितंबर, 2026
- **समय:** अपराह्न 3:00 बजे
- **स्थान:** एनईसी सम्मेलन कक्ष, शिलांग
- **विषय-वस्तु:** “स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद”
- **विषय:** “पूर्वोत्तर क्षेत्र की स्वास्थ्य विरासत का संरक्षण – स्थानीय स्वास्थ्य परंपराएँ, लोक प्रथाएँ और व्यवस्थित दस्तावेजीकरण की दिशा में मार्ग”
- **वक्ता:** प्रो. (डॉ.) रमा कांता शर्मा, पूर्व प्राचार्य, राजकीय आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, गुवाहाटी तथा यूएसटीएम, मेघालय से संबद्ध आईए आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज।

1. पृष्ठभूमि

उत्तर पूर्वी परिषद (एनईसी) द्वारा **11वें आयुर्वेद दिवस – 2026** के अवसर पर पूर्वोत्तर क्षेत्र में विद्यमान समृद्ध पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान के संरक्षण एवं व्यवस्थित दस्तावेजीकरण पर केंद्रित एक क्षेत्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन “स्वस्थ भविष्य के लिए आयुर्वेद” विषय के अंतर्गत किया गया।

2. उद्देश्य

वेबिनार के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे:

- क्षेत्र में विद्यमान स्वदेशी स्वास्थ्य ज्ञान, स्थानीय उपचार पद्धतियों तथा औषधीय पौधों से संबंधित परंपराओं को रेखांकित करना।
- पारंपरिक ज्ञान के लुप्त होने से पूर्व उसके दस्तावेजीकरण की आवश्यकता पर बल देना।
- समुदायों, राज्य आयुष विभागों, अनुसंधान संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।
- दस्तावेजीकृत पारंपरिक पद्धतियों की वैज्ञानिक स्क्रीनिंग, अनुसंधान एवं प्रमाणीकरण को प्रोत्साहित करना।

3. कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ

सत्र में पूर्वोत्तर के आठ राज्यों में विद्यमान विविध ज्ञान-परंपराओं को रेखांकित किया गया, जिनमें **स्थानीय उपचार पद्धतियाँ, औषधीय पौधे, मौखिक परंपराएँ तथा सामुदायिक ज्ञान** प्रमुख हैं।

वेबिनार के दौरान **ज्ञान-धारकों की बढ़ती आयु, बदलती जीवनशैली, प्रवासन तथा लिखित अभिलेखों की सीमित उपलब्धता** के कारण पारंपरिक ज्ञान के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों पर चर्चा की गई। साथ ही, दस्तावेजीकरण,

स्क्रीनिंग, अनुसंधान एवं प्रमाणीकरण के लिए आयुष मंत्रालय तथा सीसीआरएस के माध्यम से उपलब्ध मौजूदा राष्ट्रीय तंत्रों को भी रेखांकित किया गया।

दस्तावेजीकरण के संभावित क्षेत्रों में **औषधीय पौधे, स्थानीय उपचार पद्धतियाँ, मातृ एवं पारंपरिक देखभाल, न-आहार संबंधी प्रथाएँ, हड्डी जोड़ने की पारंपरिक पद्धतियाँ तथा सामुदायिक स्वास्थ्य एवं कल्याण संबंधी प्रथाएँ** शामिल हैं।

एक साझा दस्तावेजीकरण रूपरेखा, आठ राज्यों के ज्ञान का मानचित्रण तथा अनुसंधान संबंधों को सुदृढ़ करने के माध्यम से क्षेत्रीय दृष्टिकोण अपनाने का प्रस्ताव रखा गया। इस दौरान मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में **“क्षेत्रीय रूप से सोचें। स्थानीय स्तर पर दस्तावेजीकरण करें। वैज्ञानिक रूप से प्रमाणीकरण करें।”** प्रस्तुत किया गया।

4. प्रमुख परिणाम

वेबिनार के माध्यम से:

- पूर्वोत्तर क्षेत्र की पारंपरिक स्वास्थ्य विरासत के संबंध में जागरूकता उत्पन्न हुई।
- स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं के व्यवस्थित दस्तावेजीकरण एवं संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया।
- समुदायों, आयुष संस्थानों तथा अनुसंधान संगठनों के बीच सहयोग के अवसरों को रेखांकित किया गया।
- **संरक्षण एवं दस्तावेजीकरण से वैज्ञानिक प्रमाणीकरण तक** एक उत्तरदायी प्रक्रिया को बढ़ावा दिया गया।
- **पूर्वोत्तर क्षेत्र-व्यापी ज्ञान-आधार** विकसित करने की संभावनाओं को रेखांकित किया गया।

5. निष्कर्ष

वेबिनार ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के पारंपरिक स्वास्थ्य ज्ञान के संरक्षण से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया। इसमें वैज्ञानिक अनुसंधान एवं उत्तरदायी उपयोग को बढ़ावा देते हुए सामुदायिक ज्ञान को **संरक्षित, दस्तावेजीकृत, सुरक्षित एवं समझने** की आवश्यकता पर बल दिया गया।

कार्यक्रम का समापन **“संरक्षण से एक जीवंत क्षेत्रीय ज्ञान-आधार की दिशा में”** आगे बढ़ने की परिकल्पना के साथ हुआ, जिसमें समुदायों और ज्ञान-धारकों को इस प्रक्रिया के केंद्र में बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया।
